समष्टि अर्थशास्त्र की मूल अवधारणाएँ [BASIC CONCEPTS OF MACRO ECONOMICS]

समष्टि अर्थशास्त्र (Macro Economics) अर्थशास्त्र की वह शाखा है जिसमें समस्त अर्थव्यवस्था के स्तर पर *आर्थिक क्रियाओं, आर्थिक सम्बन्धों तथा आर्थिक समस्याओं का अध्ययन एवं विश्लेषण* किया जाता है।

समष्टि अर्थशास्त्र की कतिपय मूल अवधारणाओं का वर्णन निम्नवत् किया जा सकता है :-

वस्तुओं के प्रकार (Types of goods)—

(अ) अंतिम वस्तुएँ तथा मध्यवर्ती वस्तुएँ।
(ब) उपभोग वस्तुएँ तथा पूंजीगत वस्तुएँ।

अंतिम वस्तुएँ (FINAL GOODS)

अंतिम वस्तुएँ वे वस्तुएँ हैं, जो उत्पादन की सीमा रेखा (Boundary line of production) को पार कर चुकी हैं और अपने अंतिम प्रयोगकर्ताओं (Final users) द्वारा प्रयोग के लिए तैयार हैं।

अंतिम प्रयोगकर्ता होते हैं : (i) उपभोक्ता अथवा (ii) उत्पादक।

उदाहरण : उपभोक्ता कपड़ों तथा जूतों के अंतिम प्रयोगकर्ता होते हैं। उत्पादक प्लांट तथा मशीनों के अंतिम प्रयोगकर्ता होते हैं।

अंतिम वस्तुओं को अग्रलिखित रूपों में वर्गीकृत किया जाता है :

(i) अंतिम उपभोक्ता वस्तुएँ (Final Consumers Goods)—ये वे वस्तुएँ हैं जो अपने अंतिम प्रयोगकर्ताओं द्वारा उपयोग के लिए तैयार होती हैं और उपभोक्ता उनके अंतिम प्रयोगकर्ता होते हैं; जैसे—उपभोक्ताओं द्वारा प्रयोग किया जाने वाला ब्रेड तथा मक्खन।

(ii) अंतिम उत्पादक वस्तुएँ (Final Producers Goods)—ये वे वस्तुएँ हैं जो अपने अंतिम प्रयोगकर्ताओं द्वारा उपयोग के लिए तैयार होती हैं और उत्पादक उनके अंतिम प्रयोगकर्ता होते हैं; जैसे—किसानों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले ट्रैक्टर तथा हार्वेस्टर।

मध्यवर्ती वस्तुएँ (Intermediate Goods)

मध्यवर्ती वस्तुएँ वे वस्तुएँ हैं जो उत्पादन की सीमा रेखा के अंदर हैं और अंतिम प्रयोगकर्ताओं द्वारा प्रयोग के लिए तैयार नहीं हैं। इनमें अभी मूल्य वृद्धि की जानी होती है। ये वस्तुएँ आगे बिक्री के लिए खरीदी जाती हैं अथवा उत्पादकों द्वारा कच्चे माल के रूप में प्रयोग की जाती हैं।

उदाहरण : बढ़ई द्वारा कुर्सी बनाने के लिए लकड़ी खरीदना अथवा लकड़ी के व्यापारी द्वारा पुनः बिक्री के लिए लकड़ी खरीदना।

राष्ट्रीय उत्पाद अथवा राष्ट्रीय आय की गणना में मध्यवर्ती वस्तुओं को शामिल नहीं किया जाता है अन्यथा राष्ट्रीय उत्पाद के अनुमान में 'दोहरी गणना' (Double Counting) हो जाएगी।

मध्यवर्ती उपभोग (Intermediate Consumption) से अभिप्राय उस व्यय से है जो एक लेखा वर्ष में उत्पादकों द्वारा मध्यवर्ती वस्तुओं की खरीद पर किया जाता है।

अंतिम तथा मध्यवर्ती वस्तुओं में अंतर

अंतिम वस्तुएँ (Final Goods)	मध्यवर्ती वस्तुएँ (Intermediate Goods)
ये वस्तुएँ उत्पादन की सीमा रेखा से बाहर होती हैं। इन वस्तुओं में मूल्य वृद्धि नहीं की जाती है।	ये वस्तुएँ उत्पादन की सीमा रेखा के अंदर होती हैं। इनके मूल्य में वृद्धि अभी होनी है।
ये वस्तुएँ अंतिम उपभोक्ता के पास उपभोग या निवेश के लिए तैयार होती हैं।	ये वस्तुएँ उत्पादकों द्वारा या तो अन्य वस्तुओं के रूप में या पुनः बिक्री के लिए प्रयोग में लाई जाती हैं।
अंतिम वस्तुओं का या तो उपभोग अथवा निवेश किया जाता है।	मध्यवर्ती वस्तुओं का उत्पादकों द्वारा मध्यवर्ती उपयोग किया जाता है।
इन वस्तुओं को राष्ट्रीय उत्पादन अथवा राष्ट्रीय आय के अनुमान में सम्मिलित किया जाता है।	इन वस्तुओं को राष्ट्रीय उत्पादन अथवा राष्ट्रीय आय के अनुमान में शामिल नहीं किया जाता है।

उपभोग वस्तुएँ अथवा उपभोक्ता वस्तुएँ (Consumption Goods or Consumer Goods)—

उपभोग अथवा उपभोक्ता वस्तुएँ वे वस्तुएँ हैं जिनका उपयोग मानवीय आवश्यकताओं की प्रत्यक्ष संतुष्टि के लिए किया जाता है; जैसे—परिवार द्वारा रोटी खाना अथवा मोबाइल का उपयोग। इन वस्तुओं का उपयोग अन्य वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन के लिए नहीं किया जाता।

उपभोक्ता वस्तुएँ अंतिम उपभोग के लिए होती हैं तथा अंतिम वस्तुओं के रूप में अंतिम प्रयोगकर्ताओं द्वारा प्रयोग की जाती हैं।

उपभोक्ता वस्तुओं के प्रयोगकर्ता होते हैं :

(i) उपभोक्ता परिवार (Consumer Households),
(ii) सामान्य सरकार, एक कल्याणकारी एजेंसी के रूप में (जैसे—जब सरकार द्वारा वृद्धावस्था पेंशन आदि का वितरण किया जाता है),
(iii) गैर-सरकारी संगठन (NGOs) (जब वे अपने कर्मचारियों के उपयोग के लिए अथवा अन्य हेतु उपभोक्ता वस्तुएँ खरीदते हैं)।

अंतिम प्रयोगकर्ताओं (i), (ii) तथा (iii) द्वारा उपभोग वस्तुओं पर किए जाने वाले व्यय को *अर्थव्यवस्था का अंतिम उपभोग व्यय* कहा जाता है।

उपभोग वस्तुओं का वर्गीकरण (CLASSIFICATION OF CONSUMPTION GOODS)

1. **टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुएँ (Durable Consumer Goods)**—वे वस्तुएँ हैं जिनका उपयोग कई वर्षों तक किया जा सकता है। इनका उपयोग बार-बार किया जाता है। उदाहरण के लिए, टेलीविजन, कार, स्कूटर, वाशिंग मशीन आदि।

2. **अर्ध-टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुएँ (Semi-durable Consumer Goods)**—वे वस्तुएँ हैं जिनका उपयोग एक वर्ष या उससे कुछ अधिक समय तक किया जा सकता है। इनका उपयोग मूल्य में अधिक नहीं होता। उदाहरण के लिए, कपड़े, जूते, कंबल, बिजली का सामान आदि।

3. **गैर-टिकाऊ अथवा एक-उपयोग उपभोक्ता वस्तुएँ**—वे वस्तुएँ हैं जिनका उपयोग केवल एक ही बार किया जा सकता है। इन्हें शीघ्र समाप्त होने वाली वस्तुएँ कहते हैं; जैसे—ब्रेड, दूध, सब्जी, घी, पेट्रोल आदि।

4. **सेवाएँ (Services)**—सेवाएँ वे गैर-भौतिक वस्तुएँ हैं जो मानवीय आवश्यकताओं की प्रत्यक्ष रूप से संतुष्टि करती हैं; जैसे—डॉक्टर, वकील, घरेलू नौकर की सेवाएँ आदि।

पूंजीगत वस्तुएँ (Capital Goods)—

पूंजीगत वस्तुएँ वे वस्तुएँ हैं जिनका उत्पादन की प्रक्रिया में बार-बार कई वर्षों तक प्रयोग किया जाता है।

इनका मूल्य ऊँचा होता है।

ये उत्पादकों की स्थिर परिसम्पत्तियाँ होती हैं;

जैसे—प्लांट तथा मशीनरी।

यद्यपि नट तथा बोल्ट (Nut and Bolt) अथवा कील तथा पेंच (Nails and Screws) को भी कई वर्षों तक प्रयोग में लाया जाता है, किन्तु ये पूंजीगत वस्तुएँ नहीं होतीं, क्योंकि ये कम कीमत वाली वस्तुएँ हैं। इसके विपरीत पूंजीगत वस्तुएँ उच्च मूल्य वाली होती हैं।

उत्पादकों के केवल स्थिर परिसम्पत्तियों को ही पूंजीगत वस्तुएँ माना जाता है जिनका उत्पादन की प्रक्रिया में कई वर्षों तक प्रयोग में लाया जाता है।

सभी मशीनें पूंजीगत वस्तुएँ नहीं होतीं (ALL MACHINES ARE NOT CAPITAL GOODS)

सभी मशीनें पूंजीगत वस्तुएँ नहीं होतीं। दर्जी की दुकान में पड़ी सिलाई मशीन दर्जी की स्थिर परिसम्पत्ति है—यह एक पूंजीगत वस्तु है। परन्तु, वही मशीन यदि एक उपभोक्ता के घर में है तो वह पूंजीगत वस्तु नहीं कहलाएगी। तब वह केवल एक टिकाऊ उपभोक्ता वस्तु है। इसी तरह एक पर्यटन कम्पनी की कार एक पूंजीगत वस्तु है, परन्तु वही कार यदि एक उपभोक्ता परिवार के पास है तो वह एक टिकाऊ उपभोक्ता वस्तु है।

अतः पूंजीगत वस्तुओं की पहचान करते समय यह ध्यान में रखना चाहिए कि उसका अंतिम-प्रयोगकर्ता (End user) कौन है। केवल वही टिकाऊ वस्तुएँ पूंजीगत वस्तुएँ होती हैं जिनका उत्पादक वस्तुओं के रूप में प्रयोग होता है, न कि उपभोक्ता वस्तुओं के रूप में।

सभी पूंजीगत वस्तुएँ उत्पादक वस्तुएँ होती हैं, किन्तु सभी उत्पादक वस्तुएँ पूंजीगत वस्तुएँ नहीं होती हैं।

उत्पादक वस्तुएँ वे वस्तुएँ होती हैं जिनका प्रयोग अन्य वस्तुओं के उत्पादन के लिए किया जाता है। इन वस्तुओं में सम्मिलित होते हैं :

(i) *उत्पादकों द्वारा कच्चे माल के रूप में उपयोग की जाने वाली वस्तुएँ,* जैसे—कागज बनाने के लिए लकड़ी का उपयोग तथा

(ii) *वे वस्तुएँ जिनका उत्पादक स्थिर परिसम्पत्ति के रूप में प्रयोग करते हैं,* जैसे—प्लांट तथा मशीनरी। उत्पादक की स्थिर परिसम्पत्ति होने पर भी कच्चा माल उत्पादक वस्तु होता है किन्तु वह पूंजीगत वस्तु नहीं होता है। ये केवल टिकाऊ-उपयोग वस्तुएँ होती हैं।

निवेश की अवधारणा (CONCEPT OF INVESTMENT)

निवेश क्या है? (What is Investment)

उत्पादक सदैव यह प्रयास करता है कि उसके पास पूंजी के स्टॉक में वृद्धि होती रहे, ताकि उनकी उत्पादन क्षमता में समय के साथ-साथ वृद्धि होती रहे। *एक वर्ष के दौरान पूंजी के स्टॉक में होने वाली वृद्धि एक वर्ष का निवेश कहा जाता है।* अतः

$$I = \Delta K$$

निवेश = वर्ष के दौरान (i) पूंजी के स्टॉक में परिवर्तन

(जहाँ, I = निवेश, K = पूंजी का स्टॉक, ΔK = वर्ष के दौरान पूंजी-स्टॉक में परिवर्तन)

पूंजी के स्टॉक में परिवर्तन को पूंजी निर्माण (Capital Formation) भी कहा जाता है।

पीटरसन (Peterson) के अनुसार, *"निवेश में उत्पादन के टिकाऊ साधन, नए निर्माण तथा स्टॉक में होने वाले परिवर्तन के खर्च को सम्मिलित किया जाता है।"*

निवेश के अर्थ को स्पष्ट करते हुए **केन्स** ने कहा है कि "निवेश से समग्र अभिप्राय पूंजीगत पदार्थों में होने वाली वृद्धि से है।"

स्थिर निवेश तथा मालसूची निवेश (Fixed Investment and Inventory Investment)

निवेश के दो घटक हैं : *(i) स्थिर निवेश तथा (ii) माल-सूची निवेश।*

स्थिर निवेश (Fixed Investment)—*स्थिर निवेश से अभिप्राय एक लेखा वर्ष की अवधि में उत्पादकों की स्थिर पूंजी के स्टॉक में वृद्धि के होने से है। उत्पादकों द्वारा स्थिर परिसम्पत्तियों अथवा पूंजीगत वस्तुओं (जैसे प्लांट तथा मशीनरी) की खरीद को किया गया व्यय स्थिर निवेश कहलाता है।*

स्थिर निवेश = लेखा वर्ष के अंत में उत्पादकों की स्थिर परिसम्पत्तियों का स्टॉक – लेखा वर्ष के आरम्भ में उत्पादकों की स्थिर परिसम्पत्तियों का स्टॉक = एक लेखा वर्ष के दौरान उत्पादकों की स्थिर परिसम्पत्तियों के स्टॉक में वृद्धि

माल-सूची निवेश (Inventory Investment)

किसी समय विशेष पर उत्पादक के पास जो स्टॉक होता है उसमें (i) तैयार वस्तुएँ (बिना बिकी वस्तुएँ), (ii) अर्द्ध-तैयार वस्तुएँ (उत्पादन की प्रक्रिया में वस्तुएँ) तथा (iii) कच्चे माल सम्मिलित होते हैं। इसे माल-सूची स्टॉक कहा जाता है। समय के साथ-साथ प्रायः इस स्टॉक में परिवर्तन होता रहता है। वर्ष के दौरान माल-सूची स्टॉक में होने वाले परिवर्तन को उत्पादक का माल-सूची निवेश कहते हैं।

माल-सूची निवेश = लेखा वर्ष के अंत में माल-सूची स्टॉक – लेखा वर्ष के आरम्भ में माल-सूची स्टॉक = एक लेखा वर्ष के दौरान माल-सूची के स्टॉक में परिवर्तन

सकल निवेश, शुद्ध निवेश तथा मूल्य ह्रास की अवधारणा
(Gross Investments, Net Investment and Concept of Depreciation)

सकल निवेश (Gross Investment)—वर्ष के दौरान स्थिर परिसम्पत्तियों अथवा माल-सूची स्टॉक को क्रय करने हेतु किया गया व्यय सकल निवेश कहलाता है।

सकल निवेश = लेखा वर्ष के दौरान स्थिर परिसम्पत्तियों पर किया गया व्यय

. लेखा वर्ष के दौरान माल-सूची स्टॉक पर किया गया व्यय

सकल निवेश में घिसी-पिटी परिसम्पत्तियों के स्थान पर नई परिसम्पत्तियों को क्रय करने के लिए किया गया व्यय भी शामिल रहता है।

शुद्ध निवेश (Net Investment)—सकल निवेश में से टूट-फूट अथवा घिसावट या अप्रचलन के मूल्य को घटाकर शुद्ध निवेश प्राप्त होता है।

शुद्ध निवेश का महत्व (Importance of Net Investment)

शुद्ध निवेश के फलस्वरूप पूंजी के स्टॉक में शुद्ध वृद्धि होती है। इससे उत्पादक की उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है। इससे उत्पादन का पैमाना बढ़ता है। तदनुसार उत्पादन का स्तर भी बढ़ता है। यह वृद्धि विकास का सूचक है।

मूल्य ह्रास की अवधारणा (Concept of Depreciation)

जब स्थिर परिसम्पत्तियों (जैसे—प्लांट तथा मशीनरी) का उपयोग किया जाता है तो

(i) *सामान्य टूट-फूट* तथा

(ii) *आकस्मिक हानि (मरम्मत तथा रख-रखाव के अतिरिक्त*) के कारण उनके मूल्य में कमी हो जाती है।

इसे मूल्य ह्रास कहा जाता है।

प्रत्याशित अवमूल्यन तथा अप्रत्याशित अवमूल्यन

(Expected Obsolescence and Unexpected Obsolescence)

(i) तकनीक के परिवर्तन के कारण जब स्थिर परिसम्पत्तियों का अवमूल्यन हो जाता है।

(ii) मांग में परिवर्तन के कारण जब परिसम्पत्तियों का अवमूल्यन हो जाता है।

अप्रत्याशित अवमूल्यन के प्रमुख कारण इस प्रकार हैं—

(i) प्राकृतिक विपदाएँ—जैसे आग, बाढ़ तथा भूकम्प।

(ii) आर्थिक मंदी के कारण परिसम्पत्तियों के बाजार मूल्य में गिरावट।

स्टॉक एवं प्रवाह *(STOCK AND FLOW)*

स्टॉक **-निश्चित समय (point of time) पर एक वस्तु की संचित की गई मात्रा से है**

- एक स्टॉक चर का कोई समय आयाम (time dimension) नहीं होता
- सम्पत्ति, श्रम बल, पूंजी, एक देश में मुद्रा की पूर्ति, बैंक जमा, छत की टंकी में पानी, वाराणसी तथा आगरा के बीच की दूरी।

प्रवाह **-एक वस्तु के चालू उत्पादन की मात्रा जो बाजार में प्रवाहित अथवा गतिमान होती है उसे प्रवाह कहते हैं।**

- एक प्रवाह चर का निश्चित समय काल (specified period of time) होता है।
- आय, व्यय, पूंजी निर्माण, एक देश में मुद्रा की पूर्ति में परिवर्तन, पूंजी पर ब्याज, छत की टंकी से पानी का रिसाव, वाराणसी से आगरा जा रही एक कार की रफ्तार।

शापिरो (Shapiro) के अनुसार, "एक स्टॉक समय के एक निश्चित बिंदु में मापी मात्रा है जबकि प्रवाह वह मात्रा है जो कि केवल समय के एक निश्चित काल में मापी जा सकती है।"

आय की चक्रीय प्रवाह *(CIRCULAR FLOW OF INCOME)*

मानवीय आवश्यकताएँ असीमित तथा इन-का उत्पादन सीमित होती है, इसलिए उत्पादन प्रक्रिया अनिश्चित तथा अनन्त प्रकृति की होती है। इस प्रक्रिया में परिवार क्षेत्र, उत्पादक अथवा फर्म को, उत्पादन के विभिन्न साधन जैसे भूमि, श्रम, पूंजी तथा उद्यम प्रदान करता है, जो इन्हें वेतन, मजदूरी, ब्याज, लाभ तथा किराये के रूप में परिवार क्षेत्र को भुगतान करता है। परिवार क्षेत्र फिर आय को अपनी आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने के लिए उपभोग व्यय के रूप में खर्च करता है तथा व्यावसायिक क्षेत्र इसके बदले, परिवार क्षेत्र को वस्तुओं तथा सेवाओं की पूर्ति करता है, आय प्राप्त करता है। इस प्रकार *एक क्षेत्र का व्यय, दूसरे क्षेत्र की आय बन जाता है तथा एक क्षेत्र वस्तुओं की पूर्ति, दूसरे वर्ग की मांग का संतुलन करते हुए यह प्रक्रिया अनन्त प्रकृति की होती है तथा आय, व्यय तथा उत्पादन का चक्रीय प्रवाह कहलाती है।*

चक्रीय प्रवाह के प्रकार (Types of Circular Flow of Income)

चक्रीय प्रवाह का वर्गीकरण निम्न दो प्रकार से किया जा सकता है—

1. वास्तविक प्रवाह
2. मौद्रिक प्रवाह

1. वास्तविक प्रवाह (Real Flow)

एक साधारण अर्थव्यवस्था में साधन सेवाओं का परिवार क्षेत्र से व्यावसायिक क्षेत्र की ओर प्रवाह तथा उत्पादक क्षेत्र से वस्तुओं तथा सेवाओं का व्यावसायिक क्षेत्र से परिवार क्षेत्र की ओर प्रवाह वास्तविक प्रवाह के नाम से जाना जाता है।

2. मौद्रिक प्रवाह (Money Flow)

द्वि-क्षेत्रीय आर्थिक अर्थव्यवस्था में मुद्रा, वस्तुओं तथा साधन सेवाओं के विनिमय के माध्यम के रूप में कार्य करती है। आय का मौद्रिक प्रवाह, फर्मों द्वारा परिवार क्षेत्र को, उनके साधन सेवाओं के मौद्रिक भुगतान तथा उपभोग व्यय के रूप में परिवार क्षेत्र द्वारा फर्मों को उनके वस्तुओं तथा सेवाओं के बदले में दिए गए मौद्रिक भुगतान को सम्बोधित करता है।

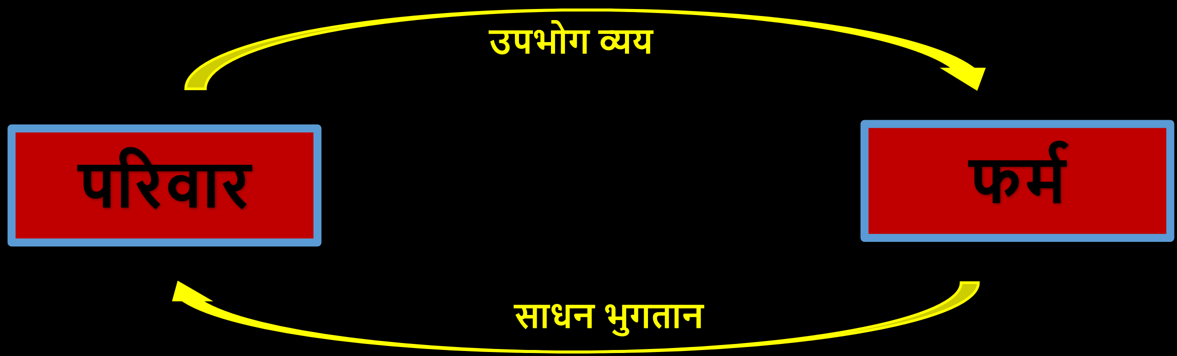

आय के चक्रीय प्रवाह के पक्ष अथवा अवस्थाएँ *(Phase or Stages of Circular Flow of Income)*

उत्पादन, उपभोग व्यय तथा आय की प्रवृत्ति एक अर्थव्यवस्था की तीन आधारभूत क्रियाएँ हैं जो निरन्तर चलती रहती हैं तथा इन्हें आय का चक्रीय प्रवाह कहा जाता है।

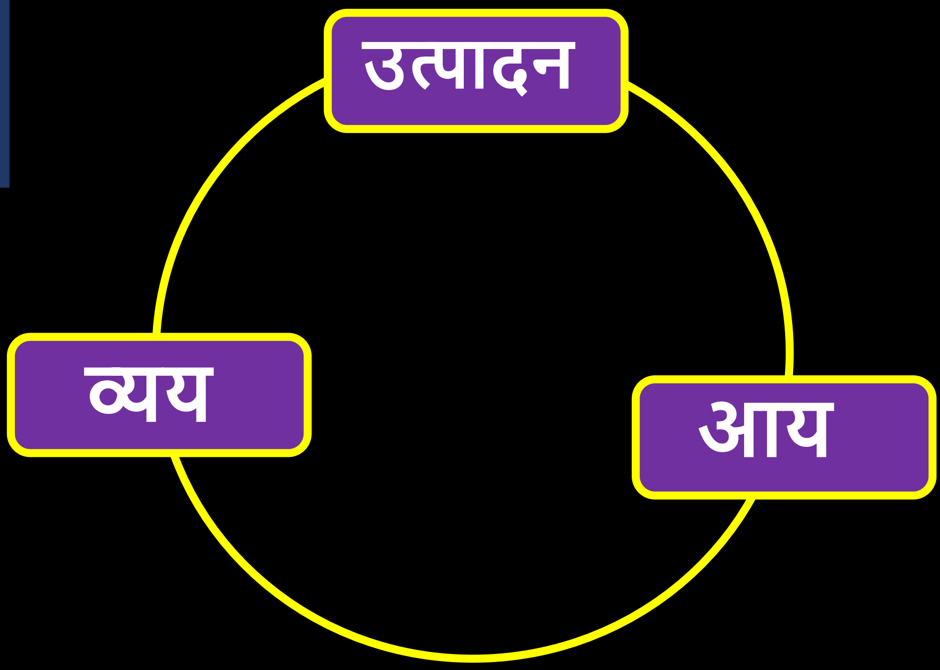

1. उत्पादन अवस्था (Production Phase)

उत्पादन का अर्थ उपयोगिता के सृजन से है जो मानवीय आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने के लिए पैदा की जाती है। हर फर्म उत्पादन कार्य करती है जो अधिकतम लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से इसे आरम्भ करती है। वह श्रम, भूमि, पूंजी तथा संगठन आदि साधन किराये पर लेकर उन्हें लगान, मजदूरी, वेतन तथा ब्याज के रूप में भुगतान करती है। इस अवस्था में वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन तथा विक्रय आय कमाना मुख्य कार्य होते हैं।

2. आय अवस्था (Income Phase)

वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन करने वाली फर्में पैदा की गई वस्तुओं तथा सेवाओं की बिक्री करके आय प्राप्त करती हैं। साथ ही आय उत्पादन क्षेत्र द्वारा प्रदान किए गए साधनों के बदले में लगान, मजदूरी, ब्याज तथा लाभ के रूप में बाँटी जाती है।

3. व्यय अवस्था (Expenditure Phase)

परिवार क्षेत्र अपनी आय को असीमित तथा बार-बार उत्पन्न होने वाली आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने के लिए व्यय करता है।

द्वि- क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था मॉडल में आय का चक्रीय प्रवाह (Two Sector Model of the Circular Flow of Income)

इसके अंतर्गत अर्थव्यवस्था में दो क्षेत्र होते है – *उत्पादक एवं परिवार*

परिवार फर्म को साधन सेवाएँ जैसे श्रम, पूंजी, उद्यम आदि प्रदान करते है तथा इसके बदले वेतन, ब्याज, लाभ तथा किराया आदि प्राप्त करते हैं। फर्म क्षेत्र इन सेवाओं का प्रयोग करके वस्तुएँ पैदा करता है तथा उन्हें पारिवारिक क्षेत्र को वस्तुओं के बदले में बेच देता है। पारिवारिक क्षेत्र की बचत, वित्तीय संस्थानों के माध्यम से फर्म क्षेत्र में निवेश के रूप में धारण कर लेती है।

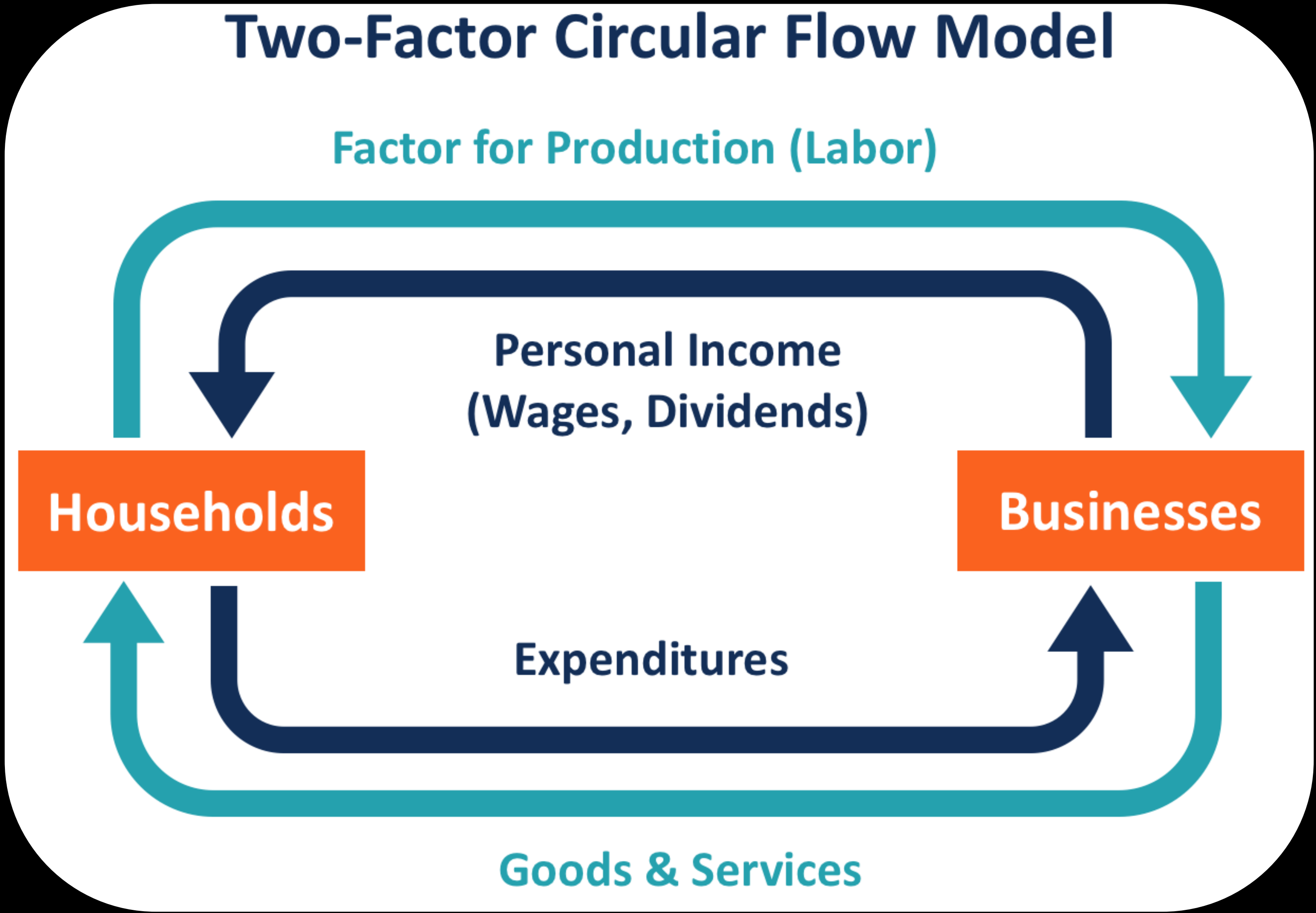

तीन क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में आय का चक्रीय प्रवाह (Three Sector Model of the Circular Flow of Income)

अर्थव्यवस्था के तीन क्षेत्रीय मॉडल में ***परिवार क्षेत्र, उत्पादन क्षेत्र तथा सरकारी क्षेत्र*** शामिल होते हैं।

इसमें करों के रूप में आय का चक्रीय प्रवाह होता है। इसमें कुछ कर भुगतान परिवार क्षेत्र से सरकार को और कर के रूप में प्रवाहित होते हैं तथा उत्पादन परिवार क्षेत्र सरकार से वस्तुएँ तथा सेवाएँ खरीदने के बदले भुगतान, अनुदान तथा हस्तान्तरण भुगतान के रूप में करों के रूप में आय प्राप्त करता है। व्यय के रूप में यह सरकारी क्षेत्र को पूंजी बाजार से कुछ ऋण लेकर व्यय करता है अथवा अपने विकास निर्माण कार्य पूरे करता है।

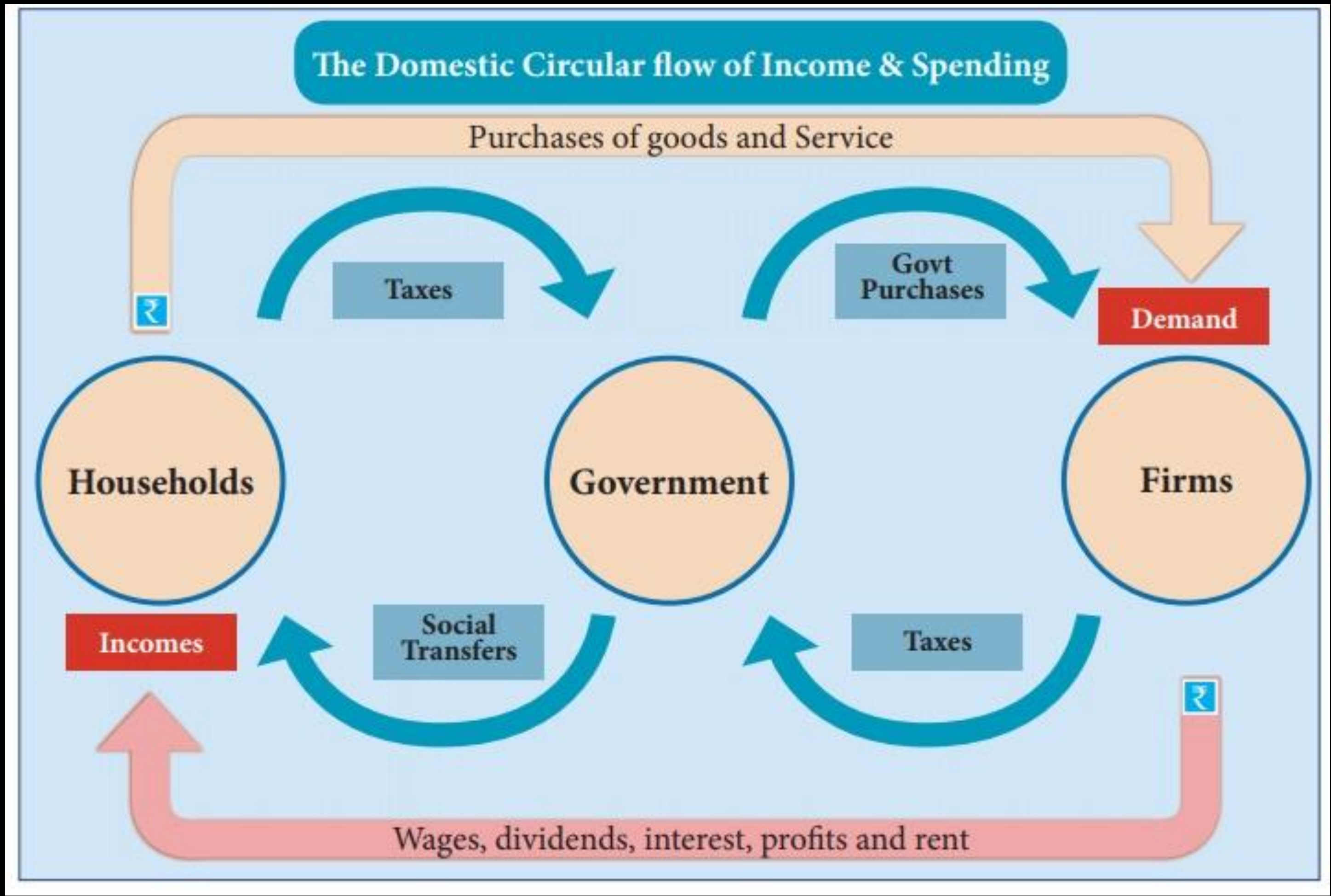

चार-क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में आय का चक्रीय प्रवाह (Circular Flow of Income in Four Sector Economy)

आधुनिक मौद्रिक अर्थव्यवस्था में निम्न चार क्षेत्रों का अंतः संबंध होता है :

परिवार क्षेत्र; उत्पादन क्षेत्र; सरकारी क्षेत्र; शेष विश्व क्षेत्र

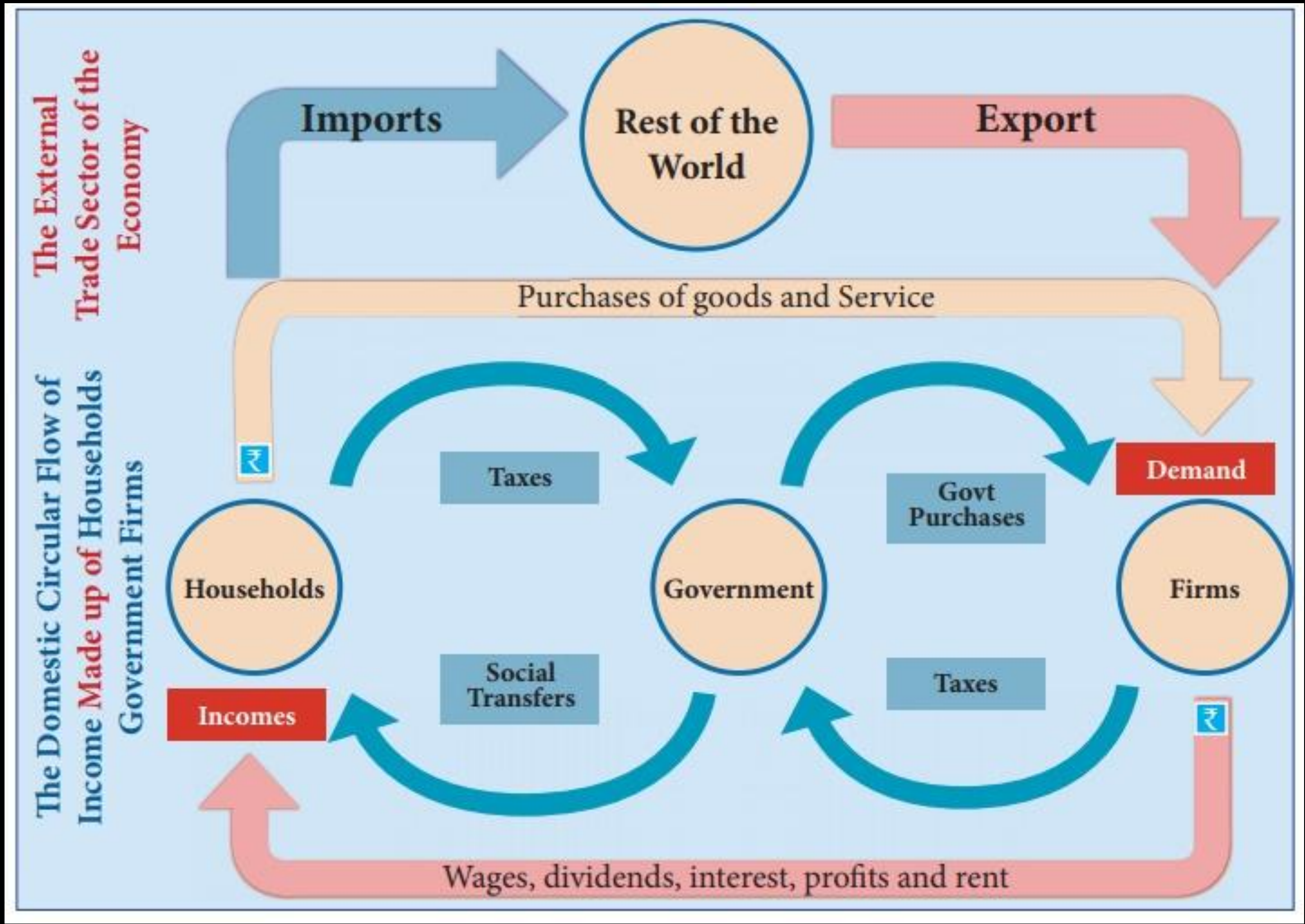

आय के चक्रीय प्रवाह के समावेशन तथा छिद्र (Leakages and Injections in Circular Flow of Income)

आय के चक्रीय प्रवाह में, कुछ आर्थिक क्रियाओं द्वारा कुछ अनुकूल परिवर्तन लाए जाते हैं जिन्हें अर्थव्यवस्था में समावेशन (Injections) कहा जाता है, जब कुछ आर्थिक क्रियाओं द्वारा अर्थव्यवस्था से कुछ मुद्रा निकाल ली जाती है तो उन्हें अर्थव्यवस्था के छिद्र (अथवा वापसी) (Leakage) कहा जाता है।

समावेशन आय के प्रवाह को बढ़ाते हैं तथा छिद्र आय के आर्थिक प्रवाह को कम करते हैं।

समावेशनों के उदाहरण—(i) सार्वजनिक निवेश, (ii) निजी निवेश, (iii) निर्यात, (iv) परिवार द्वारा उपभोग व्यय, (v) सरकार द्वारा उपभोग व्यय।

छिद्रों के उदाहरण—(i) बचत, (ii) आयात, (iii) सरकार द्वारा कर, (iv) पुराने ऋणों का भुगतान।

आय के चक्रीय प्रवाह के अध्ययन का महत्व (Significance of Study of Circular Flow of Income)

1. **राष्ट्रीय आय का मापन (Measurement of National Income)**—राष्ट्रीय आय चक्रीय प्रवाह की किसी भी आर्थिक क्रिया का परिमाणात्मक आकलन होता है। (i) दो दृष्टिकोण से सभी उत्पादन के साधनों की आय का मापन किया जाता है तथा सभी क्षेत्रों के व्यय का मापन किया जाता है, किन्तु प्रत्येक क्रिया का सामूहिक जोड़ दूसरी क्रिया के सामूहिक जोड़ के बराबर होता है।

2. **परस्पर निर्भरता का ज्ञान (Knowledge of Inter-dependence)**—ऐसे प्रवाह से प्रत्येक क्षेत्र की दूसरे क्षेत्र पर निर्भरता स्पष्ट होती है। यदि उपभोग व्यय नहीं होगा तो मांग तथा व्यय नहीं होगा जिससे उत्पादन तथा राष्ट्रीय आय कम हो जाएगी।

3. **आर्थिक क्रियाओं की अनन्तता प्रकृति (Unending Nature of Economic Activities)**—चक्रीय प्रवाह में उत्पादन, आय तथा व्यय की अनन्त प्रकृति होती है। इसलिए अर्थव्यवस्था में आर्थिक क्रियाएँ कभी समाप्त नहीं होती तथा राष्ट्रीय आय भी लगातार बढ़ती रहती है।